RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Vol.: 1, Issue: 2, July-December 2023, pp.35-40

मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक के गुणों का अध्ययन

डा० भावना सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय
बाबू शिवनाथ अग्रवाल स्नातकोतर महाविद्यालय
मथुरा, उत्तर प्रदेश

सारांश

स्वामी विवेकानंद के अनुसार- "एक अच्छा शिक्षक एक उम्मीद जगा सकता है, हमारी कल्पना को सुलगा सकता है। और हमारे मन में ज्ञान के प्रति प्रेम बिठा सकता है"। आज के युग में विद्यालय का इतना महत्व है, जितना आत्मा के लिये शरीर, कारखाने के लिये राष्ट्र के लिये भूमि, मजदूर के लिये पदार्थ, देश के लिये देश की सीमा विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा बालको के ज्ञान की आधार शिला है। शिक्षा का स्वरूप स्थिर और स्थाई नहीं हाते। मनुष्य की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये शिक्षा का स्वरुप चिरकाल से बदलता चला आ रहा है। आरम्भ में विद्यालय की स्थापना मनुष्य ने अपनी संस्कृति और संस्थाओं को सतत् बनाये रखने के लिये की थी। शिक्षा की व्यवस्था के अनुरूप शिक्षक की भूमिका भी परिवर्तित होती रहती है। इस शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में मथुरा शहर के माध्यमिक स्तर के 300 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। निष्कर्षत: पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यालय के अच्छे शिक्षक के गुणों में सबसे प्रमुख गुण शिक्षक का विषय में ज्ञान होना महत्वपूर्ण है, साथ ही कुशल व्यवहार और अनुशासित जीवन भी होना चाहिए।

मुख्य शब्द: शिक्षा, शिक्षक, गुण, माध्यमिक स्तर, वर्तमान परिदृश्य।

प्रस्तावना

गुरु की अवधारणा उपनिषदों में मिलती है। आर्युवेदों में गुरु का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। "गुरु वह है जो वेदो और सवंशि को जानने वाला हो, जो पवित्र हो, सर्वेन्द्रिय सम्पन्न हो, जिसके शरीर के सम्पूर्ण अंग उत्तम हो वह मनुष्य की प्रवृति तथा भेद को समझने वाला हो, जिसने सम्पूर्ण शास्त्र पढे हो और शास्त्रों की स्मृति भी हो, अहंकार रहित हो और कोध तथा निन्दा आदि दोषों से मुक्त हो,

क्लेशो को सहन करने वाला हो, शिष्य पर प्रेम करने वाला हो और जिस विषय पर वह पढाये उसको उदाहरण आदि द्वारा स्पष्ट रूप से समझने वाला हो"।

शिल्पी की कुशलता उसके शिल्प द्वारा परिलक्षित होती है। उसी प्रकार शिक्षक की कुशलता उसके शैक्षिक गुणों द्वारा परिलक्षित होती है। आज का छात्र कल का भावी नागरिक है, उसके कल को सुदृढ़ और साकार रुप शिक्षक ही प्रदान कर सकता है। इस कार्य के लिये शिक्षक में आवश्यक गुणों का होना जरुरी है। शिक्षक इस विशाल अध्ययन अध्यापन के कारखाने में उस जरुरी पेंच की तरह है। जिसकी सार्थकता उसके प्रभावी प्रदर्शन पर निर्भर होती है। शिक्षक की मानवीय विशेषताए और असीमित क्षमता बड़ी ही अस्पष्ट प्रतीत होती है तथा इनको आसानी से मापा नहीं जा सकता ।

आज का शिक्षक कैसा हो? उत्तम शिक्षक कैसा होना चाहिये? क्या कुछ ऐसे गुण है जो उसे अन्य शिक्षको से भिन्न बनाते हैं? यह कई सवाल है जिसका उत्तर अभी तक प्राप्त करना है। इसके लिये लगातार प्रयास होते रहे हैं तथा नए-नए प्रयास किए भी जा रहे हैं। यह अध्ययन भी उसी क्रम का एक हिस्सा है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार थे:-

(1) शिक्षको तथा छात्रों के अनुसार मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक के गुणों का जानना।

(2) शिक्षको तथा छात्रों के अनुसार मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कला वर्ग के शिक्षक के गुणों को जानना।

(3) शिक्षको तथा छात्रों के अनुसार मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान वर्ग के शिक्षक के गुणों को जानना।

अध्ययन विधि

इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

मथुरा शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को न्यादर्श के लिये लिया गया है। विद्यालय के छात्र व छात्राए जो कला तथा विज्ञान दोनों वर्गों से लिये गये। यह संख्या में 300 रहे। इनका चयन दैव निर्देशन की लाटरी विधि द्वारा किया गया। इसमे जिला मथुरा के चौदह माध्यमिक विद्यालयों को जनसंख्या रूप में लिया गया है।

उपकरण

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार वांछित सूचना प्राप्त करने के लिये उपयुक्त उपकरणों के अभाव के कारण शोधकर्ती द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली की वैधता के लिये अध्यापको तथा विषय विशेषज्ञों की सहायता ली गई। प्रश्नावली के प्रश्नों में शिक्षक के पाँच सर्वश्रेष्ठ गुणों से संबंधित प्रश्नों को रखा गया है।

प्रदत्त संकलन

मथुरा जिले के तीन माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को प्रदत्त संकलन किया। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधकर्ती द्वारा स्वंय निर्मित प्रश्नावली द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। छात्रों तथा शिक्षको को निर्देशो के अनुसार प्रश्नावली भरने को कहा गया।

प्रदत्तो का विश्लेषण तथा व्याख्या

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर उचित व्याख्या के लिये प्रदत्तो का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रतिशत द्वारा किया गया तथा बीस प्रतिशत प्राप्त गुणों को नगण्य मानते हुए छोड़ दिया गया। इसमें प्रश्नावली को दो समूहों मे वितरित किया गया। यह समूह थे मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक/ शिक्षिकाएँ एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र छात्रायें।

तालिका - 1

मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक के गुण

(समस्त छात्रो और शिक्षको के अनुसार)

शिक्षक के गुण	समस्त शिक्षको के अनुसार (%)	समस्त छात्रो के अनुसार (%)
पूर्व ज्ञान	58.0	43.30
कुशल व्यवहार	31.81	55.84
समय का पावन्द	37.92	38.46
अनुशासित	40.30	30.76
छात्रो मे रुचि	30.10	32.11

तलिका 1 से स्पष्ट होता है कि विद्यालय के शिक्षको ने 'पूर्व ज्ञान' को एक शिक्षक के लिये सबसे महत्वपूंर्ण (58%) माना है जबकि वही पर छात्रों ने शिक्षक में 'कुशल व्यवहार' (55.84%) मुख्य गुण माना है। इसी प्रकार दूसरे स्थान पर भी दोनो ने अलग-अलग गुणो को महत्व दिया है। जबकि 'समय का पबन्द' गुण को दोनो वर्ग ने तीसरे स्थान पर रखा है। संभवत शिक्षकों के अनुसार शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण गुण उसका अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होता होना होता है तथा छात्रों ने माना है कि कुशल व्यवहार वाला शिक्षक छात्रों की परेशानियों को ज्यादा अच्छे से समझ सकता है।

तालिका - 2

मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के शिक्षक के गुण

(समस्त शिक्षको तथा समस्त छात्रों द्वारा)

कला वर्ग के शिक्षक के गुण	समस्त शिक्षको के अनुसार (%)	समस्त छात्रो के अनुसार (%)
पूर्व ज्ञान	54.54	63.84
पढ़ाने का तरीका	40.90	40.76
समय का पावन्द	31.81	56.85
कुशल व्यवहार	29.27	30.23
परिश्रमी	28.01	26.30

यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि तालिका 2 के अनुसार शिक्षको के आधे समूह ने तथा छात्रो के आधे से ज्यादा समूह ने 'पूर्व ज्ञान' का कला शिक्षक में होना सबसे अहम गुण माना है। शिक्षको ने दूसरा स्थान पढाने का तरीका' को प्रदान किया है और छात्रों ने इसको तीसरा महत्वपूर्ण गुण माना है। शिक्षको के अनुसार तीसरा गुण समय का पाबन्द होना माना है जिसे छात्रों ने दूसरे स्थान पर रखा है।

तालिका - 3

मथुरा जनपद के माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के शिक्षक के गुण

(समस्त शिक्षक एवं समस्त छात्रों द्वारा)

विज्ञान वर्ग के शिक्षक के गुण	समस्त शिक्षको के अनुसार (%)	समस्त छात्रो के अनुसार (%)

पूर्व ज्ञान	65.45	73.07
पढ़ाने का तरीका	77.15	66.15
समय का पावन्द	40.76	54.28
कुशल व्यवहार	48.13	38.46
अनुशासित	51.32	49.20

तालिका 3 के अनुसार समस्त शिक्षको के तीन चौथाई वर्ग ने जहां 'पढ़ाने का तरीका' विज्ञान वर्ग के शिक्षक के लिये सबसे अहम माना है, वही इसे समस्त छात्रो ने दूसरे गुण के स्थान पर रखा है। 'पूर्व ज्ञान' को छात्रो ने प्रथम तथा शिक्षको ने दूसरे स्थान पर रखा है। तीसरे स्थान पर दोनो ही वर्गों की राय अलग-अलग है, जहां शिक्षको ने 'अनुशासित' को तीसरा स्थान दिया है, वहीं 'समय का पाबन्द' को छात्रो ने तीसरे गुण के रुप में चुना है ।

निष्कर्ष

अध्ययन द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए:-

क. शिक्षको के कुछ गुण जिन्हें शिक्षकों तथा छात्रो दोनो ने ही महत्वपूर्ण माना है, वह पूर्व ज्ञान कुशल व्यवहार समय का पाबन्द और अनुशासित होना।

ख. कला वर्ग के शिक्षक के गुण जो समस्त छात्रों तथा शिक्षको द्वारा बताये गये वह लगभग समान है परन्तु उनके स्थान में अन्तर पाया गया है।

ग. विज्ञान वर्ग के शिक्षक में समस्त छात्रो तथा समस्त शिक्षको द्वारा जिन गुणों को समान रुप से स्वीकार किया वह रहे 'पढ़ाने का तरीका' और 'पूर्व ज्ञान तथा जिन गुणों को दोनो ने अलग-अलग माना वह रहे, 'अनुशासित' और 'समय का पाबन्द'।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालय के अच्छे शिक्षक के गुणों में सबसे प्रमुख गुण शिक्षक का विषय में ज्ञान होना महत्वपूर्ण है इसी के साथ-साथ कुशल व्यवहार और अनुशासित भी होना चाहिए।

सारांश

इस अध्ययन से शिक्षको को स्व मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षक के गुणों को बताते हैं जिससे शिक्षक चयन प्रक्रिया में सुधार लाया जा सकता है। अध्ययन के

सकारात्मक पक्षों को जानकर शिक्षाविदों एवं प्रशासन उन्हें और सशक्त करने भी दिशा में अग्रसर हो तथा नकारात्मक पक्षों को सुधार कर सकारात्मक पक्षों में परिवर्तन करने का के प्रयत्न कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अदावल, एस० (1979). 'क्वालिटी आफ टीचर्स', अमिताभ प्रकाशन, इलाहबाद।

ग्रे, थामस० ई० 'दी एक्टिविटीज ऑफ टीचिंग' मैक ग्रो हिल कंपनी, सिंगापुर।

चट्टोपाध्याय, रिपोर्ट ऑफ दी नेशनल कमीशन ऑफ टीचर्स प्रथम मिमोग्राफ।

चंदोला, लता० (2001). 'टीचर्स ट्रेटस' एस्टडी, टीचस एजुकेशन इन टमोड्डिल, स्टालिन प्रकाशन, दिल्ली।

पार्कर, डब्लू० एफ़०. बीकमिंग ए टीचर, एलिन व बीकन प्रकाशन हाउस।

बेस्ट, जान० डब्लू० (1968)- रेसर्च इन एजुकेशन, प्रिन्टस हॉल, नई दिल्ली।

मिश्रा, ए० आर०. शिक्षण कला, गर्ग ब्रदर्स, प्रयाग।

सिंह, आर० पी० (1984). 'द टीचर्स आफ इण्डिया', नई दिल्ली, नेशनल पविलीकेशन, नई दिल्ली।

शिक्षा और अनुसंधान, मैक मिलन कम्पनी ऑफ इंडिया।

सुनीता (1993). 'कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों की दृष्टि से अध्यापक कुशलता का अध्ययन', आगरा वि० वि०, आगरा।

टाइम्स ऑफ इन्डिया, जून 31, (1999), नई दिल्ली।